Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VII, Issue No. XIV, April-2014, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

हरिश्चंद्र वर्मा व्यंग्यात्मक निबंधकार के रूप में

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VII, Issue No. XIV, April-2014, ISSN 2230-7540

हरिश्चंद्र वर्मा व्यंग्यात्मक निबंधकार के रूप में

Randhir Singh*

Asst. Professor, Seth Tek Chand College of Education, Kurukshetra

----------X----------

व्यंग्य के उद्भव के पीछे व्यंजना नामक शक्ति मानी जाती है। भारतीय काव्य शास्त्रों में शब्द की तीन शक्तियाँ हैं–अभिधा, लक्षणा और व्यंजना। ''साक्षात् संकेतित (गुण, जाति, द्रव्य तथा क्रियावाचक) अर्थ, जिसेमुख्य अर्थ कहा जाता है, का बोध कराने वाले व्यापार को अभिधा व्यापार या शक्ति कहते हैं।''

मीठी ज़बान पर व्यंग्य : मीठी जबान का जादू आज तो नेताओं, अभिनेताओं और आम आदमी तक में दिखलाई पड़ता ही है, किन्तु प्राचीन–काल में भी इसके चमत्कारी कारनामों का उल्लेख मिलता है। यदि गांधार–कुमार शकुनि की मीठी वाणी दुर्योधन के कलेजे में कपट के इन्जैक्शन न लगाती, तो हमारे भोले भारत के सीने पर महाभारत महाविनाश का इतना रोमांचकारी फुटबाल न खेलता। यदि कपटकला की चैम्पियन मंथरा शहद और शक्कर के घोल की चाशनी में डूबी हुई अपनी जीभ पर रखकर कपट–रूपी क्रिकेट के मर्मभेदी मंत्र कैकेयी के कानों में न फिसला देती, तो कैकेयी की केवल दो ही बौलों पर दशरथ की किल्ली न उड़ती और उन्हें अपने प्राण न गँवाने पड़ते।''

जो नेता कूटनीति की कुनैन की मीठीभाषा के शहद में घोलकर जनता को पिलाने में जितना सफल रहा, वह उतना ही बड़ा देश भक्त बन गया।देशभक्ति ने एक हुनर या कला–कौशलका रूपलेलिया। मीठी जबान जनमत बटोरने का मंत्र बन गई। मीठी जबान के वशीकरण मंत्र से लोकमन्त्री पद तक पहुँच गए। मीठी ज़बान के जीने से चढ़कर प्रजाजन जनप्रिय मन्त्रियों तक पहुँचकर आत्म–कल्याण की आखिरी मंजिल तक जाने लगे। गत पचपन वर्षों से मीठी ज़बान जन–कल्याण और राष्ट्र–निर्माण का स्वर्णिम सोपान सिद्ध हो रही हैं। ऐसी स्थितियों में मीठी ज़बान से सावधानी कहाँ।''

नारी–पीड़ा पर व्यंग्य : डॉ॰ वर्मा जी अपने पेशे के प्रति ज्यादा ईमानदार और जागरूक दिखलाई पड़ते हैं। 'चिट्ठी मिस मधुमीता की' में उन्होंने पेशे की अध्यापिका मिस मधुमीता की नारी–पीड़ा को यथार्थ रूप में वर्णित किया है। कद छोटा होने के कारण उसे कोई पसंद नहीं करता, इसकी कसक उसके जीवन को अभिशप्त कर देती है। उसको देखने आये प्रोफेसर और उनके पुत्र की विकृति प्रधान विचारधारा से ही आज भारत की नारियों की यह दुर्दशा बनी है। डॉ॰ वर्मा भारतीय नारियों को कर्म का उपदेश देकर जागृत करना चाहता है। ''बिन्दु मेरा कद चाहे जितना छोटा हो, फिर भी साढे चारफीट से किसी भी तरह कम नहीं है। मालूम है, क्या तकनीक अपनायी संचारी जी के घरवालों ने! मेरी लम्बाई मापने के लिए संचारी की बहिन को पैमाना बना रखा था। उसकी लम्बाई मुश्किल से चारफीट या इससे एक–दो इंच अधिकर ही होगी। वह झबरी ले बालों से लदी खोपड़ी को बड़ी अदा से हिलाती हुई बार–बार गुजरती मेरी बराबर से। जब वह ऐसा करती, तो सबकी सामूहिक निगाहें तुलनात्मक अध्ययन में एक साथ जुट जातीं।''

नगरीय जीवन पर व्यंग्य : डॉ॰ वर्मा ने 'बहुत पछताये हम टेलिफोन लगवाकर' में नगरीय जीवन से त्रस्त उस व्यक्तिका चित्रण किया है, जिसने फैशन परस्ती की प्रतिस्पर्धा में अपने घर में टेलिफोन लगवा लिया है और टेलिफोन करने वाले व्यक्तियों को शिष्टतावश मना कर पाने के कारण अपना आर्थिक आधार कमजोर कर लिया है। इस निबन्ध में मनुष्य की आर्थिक विसंगतियों और उसकी मनः स्थितियों को बारीकी से उकेरा गया है। सचतो यह है कि ''जब तक हमारे यहाँ फोन जी नहीं पधारे थे, कुछ गिनी–चुनी जीभें ही हमारी खोपड़ी को खुरचा करतीं और मगज़ को चाटा करती थीं, लेकिन इस कलमुँहे फोन ने दूर–दूरतक की जानी–अनजानी कितनी ही जीभों का हमारी खोपड़ी से डायरेक्ट कनैक्शन जोड़ दिया। अब कश्मीर से कन्या कुमारी तक की जीभें हमारे दिमाग को बड़ी आसानी से चाट सकती हैं। पिछले दिनों से कुछ विदेशी जीभें भी हमारी खोपड़ी चाटने लगी हैं। सच मानिए, इन जीभों के हुड़दंग से तंग आकर हमारी ना समझ–सी जिन्दगी संन्यास लेने को अकुला रही हैं। हम बातों के बिया बान में खो गये हैं। कभी बातें पिनों के समान चुभती हैं, कभी फोम के गद्दों के समान बिछाकर गुदगुदाती हैं, लेकिन उनकी तासीर एक ही है। आत्मा की आंखों में सभ्यता की फैक्ट्रियों की चिमनियों का जहरीला धुआँ भर गया है। बातों की घातों से घिरा मन कहता है कि सभ्यता के इस दूरभाषी कोलाहल से जंगली गीधों, चीलों और भेड़ियों का शोर कहीं बेहतर है।''

फैशन परस्ती पर व्यंग्य : डॉ॰ वर्मा ने अपने हास्य व्यंग्य निबन्धें में आज की फैशन परस्ती पर जो युवा वर्ग ने अपनाई हुई है, उस परव्यंग्य किया है। आज के यूनिवर्सिटी माहौल पर भी खुलकर चर्चा की है कि आजकल के लड़के–लड़कियाँ किस प्रकार एक–दूसरे के फैशन को देखकर गीद् की चाल के समान फैशन करे हैं था– ''मम्मी, मुझे आपकी दी हुई नसीहतें हमेशा ध्यान रहती हैं। हाँ मम्मी मैंने आप का यह तो बताया ही नहीं कि मूड़ के गड़बड़ाने की वजह क्या थी। कभी सोचती हूँ ना हक आपका दिल दुखेगा, लेकिन यह बेईमान दिल बताये बिना भी चैन से नहीं बैठेगा। कितनी मिन्नतें करके तो आपको राजी किया था तंग कसे हुए चार–पाँच जोड़ी कपड़े तैयार कराने के लिए, लेकिन मम्मी सब मामला चौपट हो गया। बाईगॉड मम्मी दशहरे की छुट्टिद्वयों के बाद से यूनिवर्सिटी खुली है, पता नहीं हवा ने ऐसा क्य पलटा खाया है, कम्बख्त सभी लड़कियाँ

www.ignited.in

ढीले–ढाले कुर्ते और खुली मोहरी की सलवारें पहने हैं। मम्मी फैशन की दुनिया भी सचमुच बड़ी अजीब है, यहाँ मौसम बदलते देर नहीं लगती।''

राजनीतिक भ्रष्टाचार पर व्यंग्य : राजनीति आज त्याग, सेवा, देश–प्रेम, समर्पण एवं उत्थान का पर्याय न रहकर मूल्य हीनता व सिद्धान्त हीनता का पर्याय बन कर रह गई है। राजनेताओं के रूप में गांधी, नेहरू, तिलक, बोस आदि की छवि को धूर्त मिलकर अवसर वादी धूर्त एवं धन कुबेर बन जाने वाले छद् मनेता अपने चाटुकारों के बूते विश्व–रंगमंच पर सहमत एवं महिमा मंडित हो रहे हैं। 'चिट्ठी श्रीमती भगवतिया की' में पराजित मंत्री पत्नी के माध्यम से जहाँ राजनेताओं द्वारा अपनाएं गए राजनीतिक हथकण्डों की एक झलक प्रस्तुत की गई है। आज की राजनीति महज वोट की राजनीति बन कर रह गई है। वोट बटोरने के लिए अनिवार्य है, निर्धन एवं अशिक्षित मतदाताओं का भावात्मक शोषण। लच्छेदार भाषण और रुपयों की बरसात–मतदाताओं को उल्लू बनाने के लिए पहले से ही चुनावी हथकण्डे पर्याप्त थे लेकिन आज के मतदाता– खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता ही है न– ''जीपका ड्राईवर बता रहा था कि घीसूखेड़ी के हरिजनों ने, जिनको आपने धड़ाधड़ सौ–सौ रुपए और पाँच–पाँच किलो गल्ला बंटवाया था, अपनी वोटें सुतंतर पाल्टी के उम्मीदवार को दीथीं।''

डॉ॰ वर्मा ने जहां अपनी रचनाओं में गहन–गम्भीर समस्याओं पर व्यंग्य–वर्षण कर पाठक को उन पर कुछ सोचने–मनन करने को बाध्य किया है, वहीं कुछ हल्के–फुल्के विषयों पर लेखनी चलाकर हास्य एवं विनोद की मीठी, बौछार भी की है।

संदर्भ

धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश, पृ. 38

चिट्ठी मिस स्वीटी की, पृ. 76

वही, पृ. 88

वही, पृ. 93

वही, पृ. 49

चमचा पुराण, पृ. 10

चिट्ठी मिस स्वीटी की, पृ. 28

Corresponding Author

Randhir Singh*

Asst. Professor, Seth Tek Chand College of Education, Kurukshetra

E-Mail –